मास्टर ई० के० (E. K.)

कितने महान मास्टर हैं! अद्‌भुत मास्टर हैं! आंधरप्रदेश के नवीन आध्यात्मिक रत्नों में अग्रगण्य हैं। आध्यात्मिक शास्त्रीय रीति को कल तक उन्होंने ही अनेक देशों में फैलाने की कोशिश की। वे महायोगी हैं।

उनके पिता ही उनके आध्यात्मिक गरु रहे। बचपन से ही दिव्य लक्ष्यों को लेकर वे बड़े हुए। शुरु में होमियोपैथी चिकित्सा पद्धति द्वारा वे मानव सेवा करते रहे। अनेक होमियोपैथिक चिकित्सा केन्द्रों की उन्होंने स्थापना की। ऐसे महान व्यक्ति थे मास्टर ई० के०।

उन्होंने ज्योतिषशास्त्र में विशेष खोजें कीं। वेद, वाङ्‌मय और वेद ज्ञान संपत्ति का खूब अध्ययन किया-ऐसे महर्षि हैं ई० के०। मास्टर सी० वी० वी० के एकलव्य जैसे शिष्य हैं। थियोसॉफिकल मूवमेण्ट की मैडम ब्लेवेंस्की के अत्यन्त प्रिय विद्यार्थी भी रहे।

उनके मुख पर सदा स्वच्छ मुस्कान रहती है। सदैव आनन्द और करुणामय रहते हैं और अनथक कार्यसाधक ह। एक आध्यात्मिक आचार्य के रूप में विश्व के अनेक देशों का भ्रमण भी कर चुके हैं। जो भी मिलता है, उसे आध्यात्मिकता के बारे में बताते रहते हैं।

पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटी के सभी मास्टर्स इस महान ज्ञान मूर्ति मास्टर ई० के० का अध्ययन अवश्य करें।